एडवर्ड वेस्टरमार्क और बट्रैण्ड रसल के नैतिक प्रकृतिवाद का समीक्षात्मक सर्वेक्षण

महीप कुमार भारती,
शोध छात्र, (ICPR-JRF) दर्शनशास्त्र विभाग,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज
Email: maheepsingh20@gmail.com

सारांश

अधिनीति शास्त्र नैतिक भाषा की अर्थपूर्णता एवं सत्यता की चर्चा करता है। मुख्यतः दो सिद्धांत नैतिक भाषा की चर्चा विस्तार से करते हैं जिनमें संज्ञानवादी और असंज्ञानवादी सिद्धांत हैं। यह शोध–पत्र मुख्यतः संज्ञानवादी सिद्धांत से सम्बंधित है, जिसमें नैतिक निर्णयो को तथ्यात्मक निर्णयों के समान ही वर्णनात्मक एवं संज्ञानात्मक समझा जाता है। संज्ञानवाद में भी दो प्रकार के सिद्धांतों की विवेचना प्राप्त होती है, जिनमें प्रथम प्रकृतिवाद है एवं द्वितीय निर्प्राकृतिवाद। प्रकृतिवादी विचारधारा है कि नैतिक कथनों या निर्णयों को समझने के लिए हमें उन कथनों या निर्णयों को प्राकृतिक कथनों या निर्णयों में स्थानांतरित कर देना चाहिए अर्थात् उन कथनों को प्राकृतिक यथा सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक आधार पर समझना चाहिए। द्वितीय निर्प्राकृतिवादी विचारधारा यह है कि प्रकृतिवादी दृष्टिकोण असंगत है, क्योंकि नैतिक कथन या निर्णय व्यक्ति या समुदाय की मनोदशा का वर्णनमात्र करते है न कि किसी प्राकृतिक तथ्यों। अतः इन कथनों का संज्ञान में अंतः प्रज्ञा के माध्यम से स्वतः हो जाता है।

प्रकृतिवाद दो रुपों में सामने आता है प्रथम–व्यक्तिनिष्ठ प्रकृतिवाद एवं द्वितीय–वस्तुनिष्ठ प्रकृतिवाद। व्यक्तिनिष्ठ प्रकृतिवाद भी दो भागों में विभाजित है प्रथम समुदायपरक द्वितीय व्यक्तिपरक। व्यक्तिनिष्ठ प्रकृति यह मानता है कि नैतिक कथन या निर्णय व्यक्ति तथा समुदाय की मनोदशाओं का वर्णन करते हैं एवं वस्तुनिष्ठ प्रकृतिवादी विचार है कि नैतिक कथन या निर्णय व्यक्ति की मनोदशाओं का वर्णन न कर वस्तुओं एवं कर्मों का वस्तुपरक मूल्यांकन करते हैं।

यहाँ इस शोध–पत्र में प्रमुख दो दार्शनिकों यथा एडवर्ड वेस्टर मार्क एवं बट्रैण्ड रसेल के प्रकृतिवादी विचारों का उल्लेख करना है, जहां वेस्टर मार्क मानते हैं कि नैतिकभाषा संज्ञान की दृष्टि से इस कारण सार्थक है कि वह मानवीय कर्म या चरित्र के विषय में किसी वक्ता के मनोभाव का सुस्पष्ट वर्णन करती है, चूंकि नैतिकभाषा विषयी के मनोभाव का वर्णन करती है अतः वेस्टर मार्क विषयीनिष्ठ प्रकृतिवादी है वहीं रसेल महोदय मानते है कि नैतिकभाषा न तो ध र्मशास्त्री है, न तत्व मीमांसीय और न ही वैज्ञानिक बल्कि उसका अपना एक तर्क होता है, इस रुप में रसल अपने विचारों को कई बार बदलते दिखलाई देते हैं। रोनाल्डस जैगर ने रसल के विचारों को तीन रुपों में दिखलाया जिसमें पहले वे यथार्थवादी विचारधारा अपनाते है अतः वे

अंतः प्रज्ञावाद का समर्थन करते हैं, दूसरा जिसमें वे विषयी निष्ठतावाद या संवेगवाद का समर्थन करते हैं एवं तीसरा जिसमें वे विस्तार से नैतिकभाषा की सार्थकता की विवेचना करते हैं। इन सभी मतों का विस्तार से उल्लेख कर दोनों दार्शनिकों के विचारों में साम्य वैषम्य देखकर इनके विचारों की समीक्षा करना इस शोध–पत्र का उद्देश्य है।

मुख्य शब्दः *संज्ञानवाद, प्रकृतिवाद, अंतःप्रज्ञावाद, विषयी निष्ठतावाद,संवेगवाद, नैतिकभाषा की सार्थकता।*

प्रस्तावना

एडवर्ड वेस्टरमार्क को प्रकृतिवादी अधिनैतिक सिद्धान्त का आर्दश समर्थक माना जाता है। उन्होंने संज्ञानवादी भाषा–विश्लेषण की परम्परा को हमारे समक्ष प्रस्तुत किया है। इनके अनुसार नैतिक भाषा संज्ञानात्मक दृष्टि से सार्थक भाषा है। यह भाषा प्राकृतिक भाषा की भांति सरल विधि द्वारा सत्यापित होती है और बोधव्य है। किंतु वेस्टरमार्क का कहना है कि नैतिक भाषा संज्ञान की दृष्टि से इस कारण सार्थक है कि वह मानवीय कर्म या चरित्र के विषय में किसी वक्ता के मनोभाव का सुस्पष्ट *वर्णन* करती है। अतः नैतिक भाषा वक्ता विशेष के भावनाओं का वर्णन करती है और इस कारण सार्थक भाषा है। चूंकि नैतिक भाषा विषयी के मनोभावों के वर्णन करने वाली भाषा है, वेस्टर मार्क *विषयी निष्ठतावादी–प्रकृतिवाद* के समर्थक हैं। वे मानते है कि नैतिक निर्णय विषयी निष्ठ और वर्णनात्मक होने के कारण नैतिक मूल्य के विषय में सापेक्षतः सत्य है। नैतिक निर्णयों में वक्ता किसी मूल्य के वस्तुनिष्ठता या निरपेक्षता का दावा नहीं करता है। कहा जा सकता है कि वस्तुनिष्ठ मूल्य होते ही नहीं हैं –मूल्य सापेक्ष हैं। इस बात को सिद्ध करने के लिए कि नैतिक कथन मूल्य विषयक विषयी निष्ठ, सापेक्षतः सत्य, मनोभावों का वर्णन करने वाले कथन मात्र हैं, वेस्टरमार्क ने कई दृष्टांतों के द्वारा यह सिद्ध किया कि नैतिक निर्णयों में मूल्य के वस्तुनिष्ठता की धारणा कल्पित या अलीक है। इस परिप्रेक्ष में वेस्टरमार्क ने आदर्श मूलक नैतिक सिद्धांतो के तथाकथित वस्तुनिष्ठ मूल्य की धारणा की अलीकता को स्पष्ट किया। मानकीय नीतिशास्त्र के वस्तुनिश्ठ मूल्यों की अलीकता की सिद्धि से वेस्टरमार्क का *विषयी निष्ठतावाद* और मूल्य विषयक *सापेक्षतावाद* उचित रूप से प्रतिष्ठित हो पाताहै।

1906 में रचित *Origin and Development of the Moral Ideas* एवं 1932 में रचित *Ethical Relativity* नामक नीतिशास्त्र के प्रख्यात रचनाओं में वेस्टरमार्क ने अपने ढंग से नैतिकभाषा के सार्थकता के विषय में वर्णनवादी विचार के अनुरूप नैतिक संज्ञानवाद का समर्थन किया है जिसे उन्होंने ''नैतिक विषयी निष्ठतावाद'' या ''नैतिक सापेक्षतावाद'' कहा है। उनकी दूसरी पुस्तक अधिक व्यवस्थित रूप में नैतिक सापेक्षतावाद के संज्ञानवादी मत की प्रतिष्ठा करता है वेस्टरमार्क के विचारों को समझने के लिए हमें तीन महत्वपूर्ण विषयों पर ध्यान देना होगा।

प्रथम–यद्यपि वेस्टरमार्क ने विस्तार पूर्वक मनुष्यों की आदतों और रूढ़ियों एवं परम्पराओं का अध्ययन कर नैतिक विषयों में वैचारिक सापेक्षता को समझा है, तथापि उनकी मूल मान्यता यह है कि मानव समुदायों में सामान्यता नैतिक मूल्यों के विषय में जो चर्चा होती है उनमें मूल्यों

की वस्तुनिष्ठता को सिद्ध करने का प्रयास नहीं होता है। महत्व इस बात का है कि नैतिक मूल्य परक कथन विषयीगत एवं सापेक्ष हैं उसे सिद्ध किया जाए वह इस विषय पर ह्यूम से पर्याप्त रूप में प्रभावित दिखलाई पड़ते हैं। किंतु उनसे भिन्न रूप में नैतिक मूल्य से सम्बन्ध कथनों को *वक्ता विशेषों* के मन की अनुभूतियों का *वर्णनात्मक कथन* कहते हैं। अतः मूल्य–कथन सामुदायिक अनुभूत के वर्णन नहीं करते, वे व्यक्ति के अनुभूतियों के वर्णन करने वाले वर्णनात्मक कथन हैं, जिनकी सत्यता का संज्ञान सरलतापूर्वक हमें इंद्रियानुभव एवं अन्तः निरीक्षण से हो जाता हैं।

वेस्टरमार्क के विचारों को समझने का दूसरा उपाय यह है कि हम नैतिक विष्यों में उनके गैर–बौद्धिकतावादी मत को समझें जिसके आधार पर उन्होंने *वस्तुनिष्ठतावाद* का खंडन कर विषयी निष्ठतावाद एवं निरपेक्षतावाद के स्थान पर *सापेक्षतावाद* की स्थापना की है। वेस्टरमार्क का कहना है कि जैसे ही हम नैतिक विषयों पर सांस्कृतिक मतैक्य के यथार्थ को समझेंगे हम जान पाएंगे कि नैतिकता किसी निरपेक्षतः सत्य बौद्धिक युक्ति पर आधारित एवं विकसित नहीं हुई हैं। बौद्धिक युक्तियों के द्वारा कतिपय निरपेक्षतः सत्य नैतिक मूल्यों की स्थापना की जा सकती है। यह मात्र एक रूढ़ि या पूर्वाग्रह है और चूंकि कोरी बौद्धिकता ही वस्तुनिष्ठ मूल्यों को स्थापित करती है इस कारण वस्तुनिष्ठ मूल्यों की धारणा भी पूर्वाग्रह से ग्रसित है। यही कारण है कि महान मानकीय सिद्धांत मूल्य कथनों की सत्यता को निर्देश एवं वस्तुनिष्ठ सत्य मानता है क्योंकि यह सिद्धांत तथा कथित बौद्धिक युक्तियों पर आधारित है। किंतु दुर्भाग्य है कि ये सिद्धांत मूल्यों के विषय में विषयीपरकता एवं सांस्कृतिक सापेक्षता की पूर्ण उपेक्षा करतेहैं।

किंतु जिस नैतिक वस्तुनिष्ठतावाद का खंडन कर वेस्टरमार्क अपने सिद्धांत की स्थापना करते हैं वह क्या है ? उसे जानना आवश्यक है। वस्तुनिष्ठतावाद के विषय में उनकी दो धारणाएं हैं–चरम विचार में वह एक ऐसा मत है जिसके अनुसार कतिपय मूल्य मानवचेतना से परे अपना स्वतंत्र एवं निरपेक्षता बनाए हुए हैं कुछ ऐसी बातें जी0ई0 मूर ने भी की है जिसका भूल सुधार रसल के समालोचना के आलोक में बाद में उन्होंने किया। वेस्टरमार्क को भी इसकी गलती समझ में आयी क्योंकि मानव के चेतना के लोप हो जाने से मूल्यों का भी लोप हो जाता है। बाद में वेस्टरमार्क ने कहा कि वे उस मत का खंडन करते हैं जिसके अनुसार कतिपय वस्तुनिष्ठ मूल्यों जैसे, शुभ, उचित, न्याय को व्यक्तियों के शुभ, औचित्य, न्याय के विषय में व्यक्त विचारों या अनुभवों में परिवर्तित किए बिना भी समझा जा सकता है। वेस्टरमार्क का विचार है कि यह सर्वथा असंभव एवं अनुचित है कि हम व्यक्तियों के वास्तविक अनुभव एवं अनुभूतियों की उपेक्षा कर मूल्यों के यथार्थ की कल्पना कर सकें। अतः मूल्य विषयी का अनुभूति सापेक्ष है, वह उससे निरपेक्ष एवं वस्तुनिष्ठ रूप से स्वतंत्र नहीं है। वेस्टरमार्क के विचारों का बर्ट्रेण्डरसेल ने सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया हैं

"The supposed objectivity of moral values,asunderstood in this treatise, implies that they have a real existence apart from any refrence to a human mind, that what is said to be good or bad,right or wrong,cannot be reduced merely to what peoplethink to be good or bad, right or wrong."[1]अर्थात् वेस्टरमार्क उस वस्तुनिष्ठतावाद का खंडन करते हैं जो

इस बात को मानता हैं कि नैतिक मूल्य, व्यक्ति के अनुभूति के निरपेक्ष हैं। वह उस विषयी निष्ठतावादी स्थापना करते हैं जिसके अनुसार आचरण के नैतिक मूल्यों को सदैव उन व्यक्तियों की अनुभूति के वर्णन के आधार पर करना चाहिए जो उन मूल्यों की कल्पना करताहै।

वेस्टरमार्क ने जो कुछ कहा उससे स्पष्ट हो जाता है कि नैतिक मूल्यों के विषय में एवं मूल्यों की सार्थकता के विषय में दो बातें अस्वीकार्य हैं। एक तो यह कि मूल्यों का प्रत्यक्ष सम्बंध विषयी की अनुभूतियों या संवेगों से हैं एवं उनका संबंध मूल्यों के विषय में की गयी सहमति–असहमति के व्यक्तियों के वर्णन से सम्बन्धित है। चूंकि विषयी–सापेक्ष ये बातें सत्य हैं, नैतिक कथन सापेक्षतयः सत्य हैं। मूल्य विषयक जिन संवेगों के वर्णन की बात हम कर सकते हैं, वेस्टरमार्क ने उन्हें दो वर्गों में विभाजित किया प्रतिकारी (Retributive), अप्रतिकारी (Non-Retributive)[2]

प्रथम प्रकार के संवेग के प्रति किसी व्यक्ति की मानसिक प्रतिक्रिया है जो अनुमोदन की प्रतिक्रिया है। संभव है कि उसका कारण हिंसाजन्य कष्ट या पीड़ा या ग्लानि हो। जबकि अप्रतिकारी संवेग, अन्य के प्रति किसी प्रकार की मानसिक प्रतिक्रिया है ही नहीं। अतः यह नैतिक निर्णय का विषय भी नहीं हो सकता हैं। चूंकि प्रतिकारी संवेग, प्रतिक्रियात्मक हैं, वह नैतिक निर्णय के विषय हैं। किंतु उसके दो भेद हैं–नैतिक रूप से सार्थक एवं गैर–नैतिक प्रतिकारी प्रतिक्रिया। जो प्रतिकारी प्रतिक्रिया अहं–केंद्रित हैं, वह गैर–नैतिक स्वरूप का है एवं उस पर सार्थक मूल्य गत निर्णय लेना उचित नहीं है। किंतु वे संवेग जो प्रतिकारी प्रतिक्रियात्मक एवं विषय केंद्रिकता से मुक्त हैं; हम उन पर सार्थक मूल्य गत निर्णय लेते हैं। ध्यातव्य है कि यह प्रतिक्रियाएं ही ''नैतिक अनुमोदन'' एवं ''नैतिक अननुमोदन'' की प्रतिक्रियाएं या संवेग है।[3] सभी नैतिक मूल्यगत निर्णय इन्हीं संवेगों पर लिये जाते हैं। किंतु वेस्टरमार्क ध्यान दिलाते हैं कि गैर–नैतिक स्वरूप का होते हुए भी अहकेंद्रित प्रतिकारी प्रतिक्रियाएं अन्य प्रतिक्रिया से संबंधित हैं एवं महत्वपूर्ण भी क्योंकि ये बुनियादी संवेगात्मक प्रतिक्रियाएं हैं और अन्य प्रतिक्रियाएं उसकी उपजातियां हैं। कुल मिलाकर जो बात सामने आई वह यह है कि नैतिक मूल्य की बात करना वास्तव में किसी व्यक्ति या वक्ता के अपने संवेगात्मक प्रतिक्रिया या अनुमोदन–अननुमोदन की प्रतिक्रियाओं का वर्णन करनाहै। वेस्टरमार्क के विचारमें इस संदर्भ में भी विशयी के मन के अनुमोदन की संवेगात्मक प्रक्रिया का वर्णन करना ही अधिक महत्वपूर्ण है। कारण यह है कि व्यक्ति द्वारा अननुमोदन का वर्णन किसी नैतिक विषय पर अन्य के समक्ष प्रकट रूप में अपनी नकारात्मक भावना या क्रोध का या स्वीकृति को स्पष्ट कर देना है जो अत्यंत उद्वेलित करने वाला या प्रभावोत्पादक होता है। वह वक्ता के मन में सुप्त दण्डित करने या प्रतिकार करने की भावना का वर्णन करना है। चूंकि अनुमोदन की भावना का वर्णन करना प्रतिक्रिया प्रभावोत्पादक नहीं वरन सुप्त्यात्मक एवं पुरस्कारात्मक है, उसका महत्व कम है। इन बातों के आधार पर अब यह स्पष्ट हो जाता है कि नैतिक कथनों के सार्थकता का संज्ञान वक्ता के भावों के अनुमोदन–अननुमोदन वर्णनों के आधार पर हो सकता है। अतः नैतिक कथन वर्णनात्मक रूप में सार्थक या विषयीगत संवेगों के वर्णन करने वाले सार्थक कथन है। उनका प्रत्यक्ष ज्ञानइंद्रियां–अनुभव,

आत्मनिरीक्षण, एवं आत्म मूल्यांकन से संभव होता है। इसी आधार पर वेस्टरमार्क ने मूलभूत अवधारणाओं यथा 'उचित' 'कर्तव्य' 'चाहिए' एवं 'न्याय' के अर्थ को स्पष्ट किया है 'शुभ' से मूलतः अनुमोदन एवं 'चाहिए' 'उचित' एवं 'कर्तव्य' तथा 'न्याय' से जो अवश्य करना उचित है के न करने के अनुमोदन की भावनाओं का वर्णन विषयी मूल्य–कथनों के माध्यम से करता है। इसी आधार पर इनके नैतिक ध्वनि को समझा जा सकता है।

कई अन्य दार्शनिकों की भाँति Russell ने भी G.E.Moore के सिद्धांतों को स्वीकार किया, कि दर्शन को एक नये दृष्टिकोण/उपागम की आवश्यकता है। वह दृष्टिकोण यह था कि हमें, शुभ और मानव स्वभाव के बारे में तथ्यात्मक परीक्षण की आवश्यकता नही है, बल्कि हमें नैतिक भाषा के अर्थ–विश्लेषण की आवश्यकता हैं इस नये दृष्टिकोण को रसेल एवं कई अन्य दार्शनिकों ने स्वीकार किया है। नैतिक तर्कवाक्य न तो धर्मशास्त्री होते हैं, न ही तत्व मीमांसीय और न ही वैज्ञानिक होते है। बल्कि वे ऐसे वाक्य होते है जिनका अपना एक तर्क होता है।

रसेल ने दर्शनशास्त्र में एवं नीति शास्त्र में अपने लेखन को कई बार बदला और कई विरोधाभासी बातें कीं।

"Ronaldes Jager has divided into three stages the development in his ethical theory. Being a realist, during the first decade of the twentieth century, Russell was an 'objectivist'or an 'intutionst'. Last when he embraced logical atomism in philosophy under the influence of satyana, he adopted a position known as 'subjectivism' or 'emotivism'. In the early ninetheen fifties he development a more objective ethics a moral theory which might be called naturalistic".[4]

रोनाल्डस जैगर ने उनके नैतिक विचारों के इतिहास को तीन भागों में बांटा है। पहले तो रसेल का यथार्थवादी विचार आता है जिसमें वे 'अन्तःप्रज्ञावाद' का समर्थन करते है। दूसरा जिसमें वे विषयी निष्ठतावाद या संवेगवाद का समर्थन करते है। तीसरा जिसमें में विस्तार से नैतिक भाषा की सार्थकता विवेचना करते है और जिसे हम उनका 'प्रकृतिवादी' मत कहते हैं। रोनाल्ड जैगर का मानना है कि रसेल का एक नैतिक विचार नहीं है, बल्कि वे अपने विचारों का निरन्तर परिवर्तन करते है।

रसेल न *The Elements of Ethics* में मूर की तरह वस्तु निष्ठतावादी या अन्तःप्रज्ञावादी विचार रखा था उनका कहना था कि नीतिशास्त्र का लक्ष्य सद्–असद् आचरण के विषय में सत्य निर्णय लेना, होना चाहिए और इस अर्थ में वह एक विज्ञान की भांति कार्य करता है। यदि हम विचारते है कि कोई कर्म शुभ है क्योंकि उसके वस्तुनिष्ठ परिणाम अच्छे है तो इससे स्पष्ट होता है कि कुछ तो है जो अपने में शुभ है या आन्तरिक रूप में शुभ है। रसेल का कहना है कि आन्तरिक शुभों की धारणा के बिना जो हमारी इच्छाओं और विचारों से स्वतंत्र हैं, हम उसकी नैतिक विवेचना नहीं कर सकते। स्वभावतः मूर की तरह वे मूल्य विषयक वस्तुनिष्ठतावाद, जो प्रकृतिवाद का अच्छा उदाहरण है, का समर्थन करते हैं। इस प्रकार रसेल ने नैतिकभाषा के सत्यता और असत्यता की स्थापना अन्य वस्तुनिष्ठ निर्णयों की तरह करना चाहा, जैसे 'घासहरी है' और 'तांबा कठिन है' इन वस्तुनिष्ठ कथनों की तरह सत्य हैं और यह नैतिक कथन

अन्तर्वोधात्मकरूप से सत्य हैं।[5] यही कारण है कि शुभत्व–अशुभत्व के निर्णय निगमित सत्य है, वे वस्तुनिष्ठ रूप से सत्य है और इस कारण अपरिभाष्य भी हैं। FederickCopneston ने। मंतव्य किया है कि रसेल के अधिनैतिक निर्प्राकृतिवादी चिन्तनमूर से प्रत्यक्षतः प्रभावित है।[6] Ayer ने भी रसेल के उत्तरार्ध की रचना को अपनी रचना *Russell* में Moore द्वारा प्रेरित कहा। Ronald Jagger ने कहा कि रसेल वस्तुनिष्ठवादी है या और उचित कहना है कि वे अन्तःप्रज्ञावादी है।[7] यदि यह बात सत्य है तो रसेल के उत्तरार्ध के विचार, वेस्टरमार्क के प्रकृतिवादी विचार जो किसी सीमा तक वस्तुनिष्ठवादी नहीं है, कोटिगत रूप से भिन्न है। *Ethics* के प्रकाशन के बाद वस्तुनिष्ठवादी प्रकृतिवाद या अन्तःप्रज्ञावाद का बहिष्कारकिया।

इसका मुख्य कारण ह ैकि अब रसेल Harvard के दार्शनिक George Sautayana से प्रभावित हुए। उन्होंने रसेल के नैतिक सिद्धांत की आलोचना *Winds of Doctrine*में की थी, जिसे रसेल ने उचित कहा आगे चलकर रसेल ने तार्किक प्रमाणवाद का सिद्धांत दिया और अपनी इस सिद्धांत को*मूल्यों की विशयी निष्ठतावादी* सिद्धांत का आधार बताया।[8] रसेल ने यह विश्वास करना प्रारम्भ किया कि जब हम मूल्यों के विषय में कोई निर्णय देते है वे प्रारम्भिक रूप में *हमारे दृष्टिकोण, हमारी भावना को,* हमारे पसन्द–नापसन्द को अभिव्यक्त करते है। रसेल ने यह तर्क प्रथम विश्वयुद्ध 1914 से द्वितीय विश्वयुद्ध 1945 के मध्य दिया। उससे पहले रसेल के सिद्धांत को उन्होंने स्वयं खण्डित किया। Science and Religion में रसेल लिखते हैं कि दो मनुष्य किसी मूल्य के बारे में भिन्नता रखते हैं इसकी सत्यता के बारे में कोई भिन्नमत नही है, बल्कि मनुष्यों के दृष्टिकोण पर यह बात निर्भर करती है।[9] नीतिशास्त्र को विज्ञान से अलग किया जाता है इच्छाओं के आधार पर न कि ज्ञान के आधार पर। हमारी तर्क–बुद्धि का मूल्यों से कोई सम्बन्ध नहीं हैं न ही हमारे जीवन के साध्य से कोई सम्बन्ध बल्कि हमारे अपनाये जाने वाले साधन से उसका सम्बन्ध है। अर्थात् रसेल कहते है तर्क–बुद्धि का सम्बन्ध साधन से है न कि साध्य से। इन बातों से रसेल का व्यक्ति निष्ठवादी रुझान स्पष्ट होता है। प्रतीत होता है कि वे वेस्टरमार्क जैसा विचार रखते हैं पर उससे कुछ भिन्न हटकर अपनी बात रखते है। हमारे (Our) न कि व्यक्ति विषेश के पसन्द–नापसन्द की बात करते हैं। नीतिशास्त्र विज्ञान से इच्छा के आधार पर अलग है न कि किसी विशेष ज्ञान के प्रारूप के आधार पर। रसेल यह तर्क देते हैं कि तर्क–बुद्धि का सम्बन्ध हमारे मूल्य से नहीं है, हमारे साध्य से नहीं बल्कि हमारी तर्क–बुद्धि का सम्बन्ध उस प्रक्रिया से है जिससे हम साधन का चुनाव कर सकें।

विज्ञान का सम्बन्ध केवल साधन से है साध्य से नहीं। साध्य का सम्बन्ध भावनाओं से होता है। यदि हम मानते हैं कि कुछ चीजें अच्छी हैं तो विज्ञान हमें दिखा सकता है कि उन्हें कैसे प्राप्त किया जाये, एक व्यक्ति अवैज्ञानिक अपने साध्य अर्थात् जो वह पाना चाहता है उसके कारण नहीं बल्कि वह उन्हें कैसे प्राप्त कर सकता है उसके कारण।

रसेल कहते हैं कि परम्परागत नैतिक नियमों का खण्डन किसी वस्तुनिष्ठ नैतिक व्यवस्था को खण्डित करना है। यह सोच उन्हें प्रेरित करता है कि वह एक नये मानदण्ड की खोज करें जो मानव के आनन्द को बढ़ाने के लिए है। रसेल कहते हैं कि मानव आनन्दित है यदि उसकी

इच्छाओं, संवेदनाओं एवं आवेगों का संतोशीकरण हुआ है। चूंकि इच्छायें एवं आवेग व्यक्तिगत होते है इसलिए मानव उन्हें मूल्य प्रदान करता है, और वह निर्णिय करता है कि कौनसी इच्छा उसके आनन्द को बढ़ाती है या घटाती है, वे कहते हैं मानव की इच्छा के बाहर कोई भी नैतिक मानक नही है।[10] रसेल मानव को ही मूल्यों का सबसे बड़ा सृजनकर्ता मानते है और सभी मानदण्डों का खण्डन करते हैं। रसेल का यह मूल्य विषयक प्रकृतिवाद है जो निश्चयतः विषयी निष्ठतावादी है। इस सन्दर्भ में भी वेस्टरमार्क के निकट आ जाते है।

रसेल इस बात का समर्थन करते हैं कि तर्क–बुद्धि की कोई भूमिका हमें नैतिक सत्य तक ले जाने में नही होती। रसेल इस *विषयी निष्ठतावादी* दृष्टिकोण को आगे बढ़ाते हैं चूंकि वह दार्शनिक के रूप में नैतिक निर्णयों का कोई बौद्धिक आधार वे नही खोज पाते। कुछ समय पश्चात् रसेल ने युद्ध और मानव के कष्ट के विशय में जो विचार रखे उससे स्पष्ट होता है कि मूल्य का विषयी निष्ठ मत संतोषजनक नहीं है क्योंकि कई विषय वस्तुनिष्ठ रूप से मूल्यवान है जैसे मानव–कल्याण।

यही कारण था कि 1940 से 1950 के मध्य Russell ने अपनी रचनाओं में अपने विशयी निष्ठतावादी प्रकृतिवाद (जो मूल्य के सम्बद्ध था), का त्याग किया क्योंकि उन्हें लगा कि नीतिशास्त्र के तर्क–बौद्धिक आधार की उपेक्षा करना उचित नहीं था। इसलिए जैसा कि Jagger मानते हैं, उन्होंने ''प्रकृतिवादी वस्तु निष्ठता'' का समर्थन किया।[11] यह परिवर्तन Westermarck के विषयी निष्ठ प्रकृतिवाद के बिल्कुल विपरीत है। *Human Society in Ethics and Politics* में अब Russell लिखते हैं कि नैतिक निर्णय पूर्णतः विषयी निष्ठ नहीं है। वे लिखते हैं

"It may be said that if hope and desires are fundamental in ethics, then everything in ethics must be subjective, since hopes and desires are so. But this argnument is less conclusive than it sounds. The data of science are individual precepts, and these are far more subjective than common sense supposes, nevertheless, upon this basis the imposing edifice of impoing edifice of impersonal science has been built up… It may be that there is some similar way of arriving at objectivity in ethics."[12]

अर्थात् यदि नीतिशास्त्र पूर्णतः विषयी निष्ठतावादी हो जाए तो समस्त नैतिक धारणाएँ हमारे विचार, इच्छा, रुचि पर निर्भर करेंगी। किन्तु यह निराअसत्य है क्योंकि विज्ञान ने वैयक्तिकता से परे वस्तुनिष्ठ सत्य की स्थापना की हैं। इसलिए नैतिक विषयों पर प्राकृतिक चिंतन उचित है, पर वह विषयीगत नहीं हैं। यही कारण है कि Jagger ने कहा कि Russell ने प्रत्यक्ष विषयक विषयी निष्ठतावाद के आधार पर विषयी निष्ठ प्रकृतिवादी नैतिक विचारों को गढ़ा पर 1914 से चालीस साल के अन्दर प्रत्यक्ष सिद्धांत से मुक्त होते ही Russell ने समानान्तर रूप से प्रकृतिवादी विषय निष्ठावाद का समर्थन आरम्भ किया।[13]रोचक विषय है कि उनकी नैतिक यात्रा Moore के निर्प्राकृतिवादी चिन्तन के समर्थन से हुआ, वेस्टरमार्क के प्रकृतिवादी विषयी निष्ठतावाद होता हुआ प्रकृतिवादी विषयी निष्ठतावाद में समाप्त हुआ। अब Russell मानने लगे कि ''शुभ'' जैसे नैतिक पद परिभाष्य हैं क्योंकि उनकी वस्तुनिष्ठ परिभाषा इच्छा तृप्ति के आधार पर देना समीचीन है। विज्ञान के कथन की तरह यह बात स्वयं सिद्ध नहीं, न ही विषयी

के भावावेग का वर्णन है वरन् वस्तुनिष्ठ सत्य है, जिसे मनुष्य अपने अनुभव से जानता हैं।[14] इस तरह Russell ने नीतिशास्त्र को वर्णनात्मक जामा पहनाया पर वेस्टरमार्क की तरह व्यक्ति के विषयीगत विचारों के आधार पर नहीं। Ayer ने *Russell* नामक लेख में कहा कि 1930 के समय के विषयी निष्ठतावादी विचारों से Russell ने स्वयं को मुक्त कर लिया है।

रसेल नीतिशास्त्र के विषयी निष्ठतावादी दृष्टिकोण में आने वाली कुछ कमियों से परिचित थे, इसलिए उन्होंने शुद्ध विषयी निष्ठतावाद के प्रति चेतावनी दी और उन्होंने इस बात की बार–बार सलाह दी कि हम अपनी इच्छाओं को वस्तुनिष्ठ साध्यों की ओर निर्दिष्ट करें क्योंकि विषयी निष्ठवादी विचार में अनेक कमियाँ हैं। यदि हम चाहते हैं कि शुभ स्थाई हो तो हमें अपने साध्यों को वस्तुनिष्ठ बनाना होगा चूंकि विषयी निष्ठ शुभ की धारणा आगे चलकर हमें वंचित कर देती हैं।

एडवर्ड वेस्टरमार्क नैतिकभाषा को संज्ञानात्मक दृष्टिकोण से सार्थक मानते है जिनके अनुसार नैतिक कथन या निर्णय तथ्यपरक वैज्ञानिक कथनों की भांति वर्णनात्मक कथन हैं जो वस्तु, वस्तुस्थिति तथा गुण सम्बंध आदि के वर्णन करने वाले कथनों तरह वर्णनात्मक हैं जबकि रसेल के अनुसार नैतिक वाक्य न तो धर्मशास्त्रीय होते हैं जिनका अपना एक तर्क होता है, किन्तु रसेल के अन्तिम चरण की रचनाओं से ज्ञात होता है कि वे नैतिक कथनों का वर्णनात्मक मानते हुए भी उन्हें व्यक्ति के मन के भावों के वर्णन वेस्टरमार्क नैतिक भाषा वक्ता के मनोभावों का वर्णन करती है इस कारण सार्थक भाषा हैं चूंकि नैतिक भाषा विषयी के मनोभावों का वर्णन करने वाली भाषा है इस कारण वेस्टरमार्क विषयी निष्ठतावादी प्रकृतिवाद के समर्थक हैं। वे मानते हैं नैतिक निर्णय विषयी निष्ठ अवर्णनात्मक होने के कारण नैतिक मूल्य के विषय में सापेक्षता सत्य हैं जबकि रसेल का दर्शनशास्त्र में नैतिक दृष्टिकोण कई बार बदला और कई विरोधाभासी बातों को भी किया रोनाल्ड जैगर ने उनके इतिहास को तीन भागों में बांटा पहला मत यथार्थवादी है–जिसमें वे वस्तुवादी और अंतःप्रज्ञावादी बनते हैं दूसरे में वे विषयी निष्ठतावादी या संवेगवादी बनते हैं तीसरा जिसमें वे वस्तुनिष्ठ नीतिशास्त्र की चर्चा करते हैं जिसे हम उनका प्रकृतिवादी मत कहते हैं। रोनाल्ड जैगर का मानना है कि रसेल का कोई मौलिक नीतिशास्त्र नहीं है क्योंकि वे अपने मत को परिवर्तित करते रहते हैं। किन्तु यह अवश्य कहा जा सकता है कि द्वितीय चरण का उनका विषयी निष्ठतावाद वेस्टरमार्क की तरह व्यक्तिपरक नहीं समष्टिपरक है और वे मनुष्यों के सामान्य नैतिक अनुभव और अन्तर्निरीक्षण के आधार पर वस्तुनिष्ठ नैतिक सत्यों की बात करते हैं।

वेस्टरमार्क के अनुसार मानकीय विज्ञान उसे कहना चाहिए जिसका उद्देष्य ऐसे वस्तुनिष्ठ सत्यों की स्थापना करना है जो मानवीय सिद्धांतों में पायी जाती है और ऐसे सिद्धांत कतिपय वस्तुनिष्ठ नैतिक मूल्यों की कल्पना करते हैं, वेस्टरमार्क इन कल्पनाओं को उचित नहीं मानते बल्कि वे कहते हैं कि मूल्य वस्तुनिष्ठ हैं यदि उसकी वास्तविक सत्ता व्यक्ति पर निर्भर करती हो और वह नैतिक भाषा के माध्यम से अपने मन के भावों का वर्णन करता हो। रसेल ने अन्ततः जिस प्रकृतिवाद का समर्थन किया है वह भावों के व्यक्तिगत वर्णन से सम्बद्ध नहीं है, सार्वजनिक प्रत्यक्ष से सम्बद्ध है। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि यद्यपि द्वितीय चरण में

रसेल ने वेस्टरमार्क के प्रकृतिवादी विषयी निष्ठतावाद को अपनाया है, उन्हें शीघ्र इस सत्य का भान हुआ कि न तोसत्य विषयी के प्रत्यक्ष द्वारा स्थापित होता है और न ही विषयी के मन के निहित भावों के वर्णन से सिद्ध होताहै। इसलिए Russell ने जिस रूप में ''इच्छातृप्ति'' के आधार पर विषयनिष्ठ प्रकृतिवाद के सहारे मूल्यों और मूल्य–कथनों की सत्यता को स्थापित किया है वह निःसंदेह उनके मन में सुप्त प्रकृतिवाद का किसी रूप में समर्थन करना था जो उनके प्रथम और द्वितीय चरणों के नैतिक विचारों में साम्य है। समस्या यह है कि वेस्टरमार्क के विषय में हमें ज्ञान हुआ कि नैतिक कथन किसी वक्ता के भावों के वर्णन नहीं पर*अभिव्यंजना* करता है, उसी तरह यह भी स्पष्ट है कि नैतिक कथन समष्टि के मन के भावों का वर्णन नहीं करना जो ''इच्छा तृप्ति'' जैसे सापेक्षिक आधार पर टिकी हुई हैं ''इच्छा–तृप्ति'', वैज्ञानिक कसौटियों की भांति वस्तुनिष्ठ नहीं है। यह सार्वलौकिक आधार भी वही है जो नैतिक भावों की वर्णनात्मकता के लिए सम्यक सिद्ध हो सके।''दयालुता अच्छी है'' मनुष्य मात्र के मन के भाव का वर्णन करता है क्योंकि ''अच्छी'' कहना, ''इच्छातृप्ति करना'' है। यह प्रच्छन्न व्यक्ति निष्ठवाद है क्योंकि इच्छा की तृप्ति मनुष्य मात्र का होता है या नहीं देखना और कहना असम्भव है। बल्कि यह सापेक्षतः सत्य है जो वैज्ञानिक कसौटी नहीं हो सकती।

संदर्भ ग्रंथ

1 Westermarck,Edward, *Ethical Relativity* ,Routledge,London,2003,p.**3**
2 Ibid,p.**63.**
3 Ibid,pp.**62-63**.
4 Jager,Ronald, *The Development of Bertrand Russell 's Philosophy*, George Allen &Unwin,1972,p.**463-64.**
5 Russell,Bertrand, The Element of Ethics,*Philosophical Essays*, George Allen&Unwin,1966, p.**21**.
6 Copleston, Fredrick, S.J, *AHistory of Philosophy,* Vol. VIII, Burns and Oates Limited, 1966, p.**473.**
7 Jager, Ronald, Op.Cit., p.**463**.
8 Russell, Bertrand, *Religion and Science*, Oxford University Press, London, 1960 p.**237**.
9 Ibid, pp.**237-38**.
10 Russell, Bertrand, *The Basic Writing of Bertrand Russell*,Oxford University Press, London, 1960, p.**375.**
11 Jager, Ronald, Op.Cit., p.**483.**
12 Russell, Bertrand, *Human Society in Ethics and Politics*, George Allen & Unwin, 1963, pp.**26-27.**
13 Jager, Ronald, Op.Cit., p.**482**.
14 Russell, Bertrand, *Human Society in Ethics and Politics*, George Allen & Unwin, 1963, p.**127.**